

सूरह यूनस - 10

سُورَةُ يُوسُفَ

यह सूरह मक्की है, इस में 109 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुरआन) की आयतें हैं।
2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर^[1] प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो ईमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफ़िरों ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।
3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस नें आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात्। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः

الرَّسُولُكَ آيَاتِ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمٌ صَدَقَ عَنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ الْمُتَّبِعُ

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَافِعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكَ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

1 सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात् उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

उसी की इबादत (वंदना)^[1] करो।
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान^[2] करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफिर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुःखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।

5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।

6. निःसंदेह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।

7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन)

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ
حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ
مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ
اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُتَّقُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ

- 1 भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा है तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।
2 भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।

8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।
9. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी: "हे अल्लाह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: "तुम पर शान्ति हो।" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: "सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।"
11. और यदि अल्लाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये^[1] छोड़ देते हैं।
12. और जब मानव को कोई दुःख पहुँचता

الدُّنْيَا وَالْآٰلِآءِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آٰيَاتِنَا غٰفِلُونَ ۝

اُولٰٓئِكَ مَا لَهُمْ اَلْاٰلِآءِهَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهُمْ رَبُّهُمْ بِاٰيٰمِهِمْ تَخْرٰجُ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝

دَعْوَاهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَنَحْمَدُكَ فِيْهَا سَلٰمٌ وَّاٰخِرُ دَعْوَاهُمْ اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

وَلَوْ يَعْجَلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتَعْجَلُوْا بِالْخَيْرِ لَقَضٰى اِلَيْهِمْ اَجَلَهُمْ فَتَذٰرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَاءَنَا فِى طٰغْيٰنِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

وَلَا اَمْسَ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَا نَا لِجَنَّتَيْهِ

1 आयत का अर्थ यह है कि अल्लाह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मों को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दुःख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुःख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

13. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने ने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि: ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।
14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि: तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?
15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुर्आन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अवैज्ञा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।
16. आप कह दें: यदि अल्लाह चाहता तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और

أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ثَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ صُورَهُ
مَرَّكَانَ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ صَرْفَتِهِ كَذَلِكَ
زُيِّنَ لِلْمُشْرِكِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠﴾

وَلَعَدَّ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا تَظَلَّمُوا
وَجَاءَهُمْ رَسُولُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٢﴾

وَإِذَا شِئِلَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّا نَكُفِّرُ عَنْ هَذَا أَوْ
بَدَّلَهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تَلَقَّايَ
نَفْسِي إِنَّ الْكَيْمُ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ إِلَيَّ إِنِّي أَخَافُ
إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣﴾

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ

न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो?^[1]

17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये, अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

18. और वह अल्लाह के सिवा उस की इबादत (बंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं आप कहिये: क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने ने विभेद^[2] किया। और

بِهِ فَقَدْ لَيْسَتْ فِيكُمْ عُمْرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الْمُجْرِمُونَ ﴿١١﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شَفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَدْعُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٢﴾

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ। मैं तुम्हीं में से हूँ। यही मक्का में पैदा हुआ, और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है, इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुर्आन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुर्आन अल्लाह की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ। और उसी की अनुमति से यह कुर्आन तुम्हें सुना रहा हूँ।

2 अतः कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगे। (इब्ने कसीर)

यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न^[1] होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया?^[2] आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।^[3]

21. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचने के पश्चात दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षड्यंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फरिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

22. वही है जो जल तथा धूल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती है, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते

فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٠﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١١﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءَ مَا كَانُوا عَلَىٰ يَكْتُمُونَ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١٢﴾

هُوَ الَّذِي يَسِيرُ كُرْحِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلَيْنِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَ تَهَارُوحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿١٣﴾

1 कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।

2 जैसे कि सफा पर्वत सोने का हो जाता। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् अल्लाह के आदेश की।

हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के^[1] प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ^[2] हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?

24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभांवित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया,

فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغَيْتُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَتَلَمَّ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

إِنَّمَا مِثْلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَلَنَخْطُرَ بِهِ نَبَاتَ الْأَرْضِ وَمَا يَأْكُلُ النَّاسُ
وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَضَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَيْنَاهَا أَمْرًا
لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ
تَغْنِ يَا الْأُمْسُ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

1 और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।

2 भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अल्लाह को भुले रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्तर्ज्ञान उभरता है। और वह अल्लाह को पुकारने लगते हैं। और जब दुःख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुःख में उसे याद करते रहो।

जैसे कि कल वहाँ थी^[1] ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन खोल-खोल कर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।

25. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक।^[2]

27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ कीं तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छायी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगे: तुम तो हमारी बंदना ही नहीं करते थे।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

لِّلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ وَلٰكِنْ مَّا
رَوْحُهُمْ قَدْ رُوِيَ اِلٰى ذٰلِكَ اُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا
وَتَرْهَقُهُمْ ذٰلِكَ مَّا لَهُمْ مِنْ لَّدُنْ عَاصِمٍ كَاٰلِهَآ
اُعْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِّنَ الْاَيْلِ مُظْلِمًا اُولٰٓئِكَ
اَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِّلَّذِيْنَ اٰشْرَكُوْا
مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وُشْرَكَآؤُكُمْ فَنَلْنٰ بَيْنَهُمْ وَقَالَ
شُرَكَآؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ اِيَّاْنَا تَعْبُدُوْنَ

1 अर्थात् संसारिक आनंद और सुख वर्षा की उपज के समान सामयिक और अस्थायी है।

2 अधिकांश भाष्यकारों ने, «अधिक» का भावार्थ: "आखिरत में अल्लाह का दर्शन" और «भलाई» का: "स्वर्ग" किया है। (इब्ने कसीर)

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।

فَكَفَى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ۝

30. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

هٰذَا لِكَيْ تَبْلُغَ اٰكُلُ نَفْسٍ مَّا اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مُوْلٰهُمْ الْحَقِّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती^[1] से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह^[2] फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

قُلْ مَنْ يَّرِزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ اَمْ مَنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَيَقُولُونَ اللّٰهُ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

32. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

فَذَلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلٰةُ ۝
فَاَنْتُمْ تُصِرُّوْنَ ۝

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْا اَلَهُمْ الْيَوْمُؤْمِنُوْنَ ۝

34. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे साक्षियों में कोई है, जो उत्पत्ति का

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِكًا لَّكُمْ مَنْ يَّبْدُؤُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

1 आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज से।

2 जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अल्लाह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो?
आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ करता, फिर उसे दुहराता है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَلَيْ تَتَذَكَّرُونَ ﴿١٠﴾

35. आप कहिये: क्या तुम्हारे साझियों में कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य है कि उस का अनुपालन किया जाये अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِيَ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١١﴾

36. और उन (मिश्रणवादियों) में अधिकांश अनुमान का अनुसरण करते हैं। और सत्य को जानने में अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता। वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे हैं भली भाँति जानता है।

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾

37. और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा अपने मन से बना लिया जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस से पहले (पुस्तकें) उतरी हैं। और यह पुस्तक (कुर्आन) विवरण¹ है। इस में कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के पालनहार की ओर से है।

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾

38. क्या वह कहते हैं कि इस (कुर्आन) को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया है? आप कह दें: इसी के समान एक सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَلَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤﴾

1 अर्थात् अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का कुर्आन में सविस्तार वर्णन है।

जिसे (अपनी सहायता के लिये)
बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम
सत्यवादी हो।

39. बल्कि उन्होंने ने उस (कुर्आन) को
झुठला दिया जो उन के ज्ञान के
घेरे में नहीं^[1] आया, और न उस
का परिणाम उन के सामने आया।
इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था,
जो इन से पहले थे। तो देखो कि
अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस
(कुर्आन) पर ईमान लाते हैं और
कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का
पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक
जानता है।

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो
आप कह दें: मेरे लिये मेरा कर्म है
और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम
उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ।
तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम
करते हो।

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर
कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों^[2]
को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ
भी न समझ सकते हों?

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप
की ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे
को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ
تَأْوِيلُهُ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

وَإِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ إِنِّي عَلَىٰ أَعْيُنِكُمْ
بَرِيءٌ وَمِمَّا تَعْمَلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَسْمِعُ
الْغُفْمَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى
وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ۝

1 अर्थात् बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

2 अर्थात् जो दिल और अन्तर्ज्ञान के बहरे हैं।

सूझता न हो?

44. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।^[1]

45. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।

46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।

47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।

48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?

49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

وَمَا نُرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَوَفِّيْنَاكَ فَإِنَّمَا مَزَجُهُمُ اللَّهُ شَهِيدًا عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ

1 भावार्थ यह है कि लोग अल्लाह की दी हुयी समझ-बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविकता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।

52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

53. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के

لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَعِذُّونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَّاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعِذُّونَ مِنَ الْمَجْرُمِينَ ۝

أَلَمْ إِذْ آتَاكُمْ مِنْهُمُ آيَاتُ الْفَلَقِ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

وَيَسْتَفْتُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قَوْلِي أَوْ رَبِّي إِنَّهُ أَحَقُّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝

وَلَوْ أَنَّ كُلَّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا النَّفْسَ لِمَارَأَا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और
उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ
आकाशों तथा धरती में है। सुनो!
उस का वचन सत्य है। परन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है।
और उसी की ओर तुम सब लौटाये
जाओगे।^[1]

57. हे लोगो!^[2] तुम्हारे पास तुम्हारे
पालनहार की ओर से शिक्षा
(कुर्आन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा
के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य
कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है
उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

58. आप कह दें कि यह (कुर्आन) अल्लाह
का अनुग्रह और उस की दया है।
अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना
चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से
उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

59. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने
इस पर विचार किया है कि अल्लाह
ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी
है, तुम ने उस में से कुछ को हराम
(अवैध) बना दिया है, और कुछ को

الْإِنِّ يَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ الْإِنِّ وَعْدُ
اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

هُوَ يَحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَنِفَاءٌ
لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ
حَرَامًا وَحَلَلًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ
تَفْتَرُونَ ۝

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 इस में कुर्आन के चार गुणों का वर्णन किया गया है:

1. यह सत्य शिक्षा है।
2. द्विधा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।
3. संमार्ग दर्शाता है।
4. ईमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे^[1] हो?

60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील^[2] है। परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुर्आन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र हैं, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।

63. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।

64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

لَهُمُ الْبَشَرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

1 आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज़ को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

2 इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।

65. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरों) की बात उदासीन न करो वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

66. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा धरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दूसरे साझियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।

68. और उन्होंने ने कह दिया कि अल्लाह ने कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है। वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

69. (हे नबी!) आप कह दें: जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।

لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

وَلَا يَخْرُجُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسْمِعُونَ ۝

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا آتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝

70. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।
71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।
72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।
73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

مَتَاعُ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَفْقَهُونَ
كَانَ كَبُورًا عَلَيْكُمْ قَدِ ابْتِغَىٰ يَاسِينَ اللَّهُ فَعَلَّ
اللَّهُ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ
لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غِنًىةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ
وَلَا تُنْظِرُونِ ۝

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرِيَ إِلَّا
عَلَى اللَّهِ وَأَمَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَتَبَيَّنْهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلَيْنِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَةً وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا فَأَنْظَرْنَا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर^[1] लगा देते हैं।
75. फिर हम ने उन के पश्चात मूसा और हारून को फिरौन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।
76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।
77. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।
78. उन्होंने ने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।
79. और फिरौन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا ۖ فَكَانُوا لِلْيَوْمِ مَوَاقِدَ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۚ كَذَّبُوا بِسِحْرِهِ ۚ وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ ۝

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَكَ وَآبَاءَنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْيَكْبَرِيَّةُ فِي الْأَرْضِ وَنَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتَدْعُونِي لِئَلَّا أُخْرِجَ عَنْ عِلِّيَّ ۝

1 अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो जाती है।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा: जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।

81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा: तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।

82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फिरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फिरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।

84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा: हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।

85. तो उन्होंने ने कहा: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।

86. और अपनी दया से हमें काफ़िरों से बचा ले।

87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوَامَ أَنْتُمْ مُتْلِقُونَ ۝

فَلَمَّا الْقَوَامَ قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ إِنَّ اللَّهَ سَيَبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَيُحْيِي اللَّهُ الْحَيَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنْ فِرْعَوْنُ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ لِمَنْ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَى لِقَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ۝

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوِّا الْقَوْمَ كَمَا

(हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को क़िब्ला¹ बना लो। तथा नमाज़ की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

88. और मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! तू ने फिरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुखदायी यातना न देख लें।

89. अल्लाह ने कहा: तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फिरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला: मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

يَهْصِرُ يُؤْتَاوُا أَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَآئِهِ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعِنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَجُورًا إِنَّا بَنِي إِسْرَءِيلَ لَنُكْفِرَنَّهُمْ قَبْلَ الْغُرُقِ قَالَ وَجُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا حَتَّى إِذَا أَدْرَكُهُ الْغُرُقُ قَالَ أَمْنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

1 «क़िबला» उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ी जाती है।

91. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

أَلَمْ يَكُنْ مِنْ قَبْلُ عَصِيًّا وَلَمْ يَكُنْ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝

92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी^[1] बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ۝

93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान^[2] दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبْوَءَاصِدِيكَ وَرَزَقْنَهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ قَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

94. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह^[3] हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝

95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला

وَلَا تَكُونَ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

1 बताया जाता है कि: 1898 ई॰ में इस फिरौन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो काहिरा के विचित्रालय में रखा हुआ है।

2 इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

3 आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अर्बी की एक भाषा शैली है।

दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

فَتَكُونُ مِنَ الْخَيْرِينَ ﴿١٠﴾

96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿١٢﴾

98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान^[1] लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर^[2] दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَمَّا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٣﴾

99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में है सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?^[3]

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّ النَّاسِ أَفَأَنْتَ تَكْفُرُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

100. किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति^[4]

وَمَا كَانَ لِلنَّاسِ أَنْ يُؤْمِنُوا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ

1 अर्थात् यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

2 यूनस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बताया जाता है। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना दे कर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

3 इस आयत में यह बताया गया है कि सत्धर्म और ईमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया जाये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत-256)।

4 अर्थात् उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो सोच-विचार से काम लेता है

के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती हैं जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?
102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।
103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।
104. आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वन्दना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वन्दना) अल्लाह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अल्लाह की इबादत (वन्दना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।
105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

الرَّجَسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝

قُلْ أَنْظِرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُعْطَى
الْأَلْبَانِ وَالنُّدُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

فَهُمْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝

ثُمَّ نَحْنُ رُسُلْنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا
عَلَيْنَا سِجَرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي
فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ
أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

वही ईमान लाता है।

106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنْ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

وَأَنْ يَمَسُّكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَأَنْ يُرِيدَ كَيْدٌ فَنُفِثْ فَكْرَهُ لَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١١﴾

108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया^[1] है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ^[2]।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٢﴾

109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णेता है।

وَاسْتَعِمْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٣﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुआन ले कर आ गये हैं।

2 अर्थात् मेरा कर्तव्य यही है कि तुम्हें बलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ।